प्याज वर्गीय फसल लीकः लाभ की खेती

अजीत कुमार श्रीवास्तव
महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, पीपीगंज, चौक माफी–273 165, गोरखपुर, उ.प्र., भारत
ईमेलः ajitmgkvk@gmail.com

पोषक तत्वों से भरपूर लीक में प्याज की खुशबू होती है, जिससे इसे सलाद, सूप और सब्जियों में प्रयोग किया जाता है। दोमट भूमि में इसे उगाने के लिए खेत की जुताई और समतल करना आवश्यक है। इसे सर्दियों में उगाया जाता है। उत्तरी मैदानी क्षेत्रों में इसकी बुवाई नवम्बर–दिसम्बर और मध्यवर्ती क्षेत्रों में अक्टूबर–नवम्बर में होती है। सामान्य दशा में खेत में 250 कुन्तल गोबर की खाद, 150 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस और 100 किलोग्राम पोटाश प्रयोग करना चाहिए। एक हेक्टेयर की रोपाई के लिये 4–5 किलोग्राम बीज पर्याप्त है। लीक की रोपाई पंक्तियों में 30–35 सेन्टीमीटर और पौधे से पौधे में 10–15 सेन्टीमीटर अंतराल पर करनी चाहिए। खरपतवार नियंत्रण के लिए स्टाम्प या लासो का छिड़काव करें। रोपाई के एक महीने बाद हल्की निराई–गुड़ाई और 10–15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें। थ्रिप्स और मैगट कीटों के प्रबंधन के लिए इमिडाक्लोप्रिड और फिप्रोनिल का छिड़काव करें। बैंगनी धब्बा और झुलसा रोग के प्रबंधन के लिए थीरम और मैंकोजेब का उपयोग करें। लीक की फसल की खुदाई रोपाई के लगभग 140 दिन बाद होती है, जब पौधे 2–3 सेन्टीमीटर व्यास के हो जाऐं। अच्छी देखभाल से प्रति हेक्टेयर लगभग 300–400 कुन्तल पैदावार प्राप्त हो सकती है।

परिचय

लीक प्याज वर्ग की एक महत्वपूर्ण फसल है, जो प्याज और लहसुन की तरह गांठ नहीं बनाती। इसका तना लंबा और पत्ते चौड़े होते हैं। पोषक तत्वों से भरपूर होने के कारण लीक का उपयोग सलाद, सूप और विभिन्न सब्जियों में किया जाता है। इसमें प्याज की खुशबू होती है, जिससे इसे खाना अधिक स्वादिष्ट बन जाता है। लीक ठंडी जलवायु में उगाई जाती है और इसकी खेती विशेष रूप से सर्दियों में की जाती है। यह फसल पौष्टिकता और स्वाद के कारण किसानों और उपभोक्ताओं के बीच लोकप्रिय है।

भूमि एवं जलवायु

दोमट भूमि में लीक अच्छी उगती है। रोपाई से पहले खेत की दो–तीन बार जुताई करके मिट्टी का भुरभुरा तथा समतल कर लें। लीक की बढ़वार प्याज की तरह सर्द ऋतु में अच्छा होता है। इसलिए इसे भी सर्दियों में ही उगाया जाता है।

किस्में

पालम पौष्टिक, दवन जाइन्ट

बीज, उर्वरक एवं खाद

एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में लीक की फसल उगाने के लिए 4–5 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है। लगभग 250 कुन्तल गोबर की खाद, 150 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस और 100 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से डालनी चाहिए। पूर्ण गोबर की खाद, फॉस्फोरस व पोटाश तथा आधी नत्रजन खेत तैयार करते समय भूमि में मिलायें। शेष नत्रजन दो भागों में रोपाई से एक–एक महीने पश्चात् निराई–गुड़ाई के समय डालें।

बुवाई व रोपाई का समय

उत्तरी मैदानी क्षेत्रों में : नवम्बर–दिसम्बर
मध्यवर्ती क्षेत्रों में : अक्टूबर– नवम्बर

रोपाई की विधि व अन्तराल

लीक के पौध की रोपाई भी लगभग प्याज की तरह ही करनी चाहिए, परन्तु लीक में ध्यान रहे कि पौधे 10 से 15 सेन्टीमीटर गहरी नालियों में लगायें तथा पौधों के बढ़वार के साथ नालियाँ भरी जानी चाहिए। इससे पौधों के तने 10–15 सेन्टीमीटर की लम्बाई तक सफेद होते हैं तथा खुदाई के समय तक लगभग 2.5 सेन्टीमीटर व्यास के हो जाते हैं। पौधों की रोपाई 30–35 सेन्टीमीटर पंक्तियों में तथा 10–15 सेन्टीमीटर पौधों में अंतराल पर करनी चाहिए।

सस्य क्रियाएँ

खरपतवार प्रबंधन के लिए रोपाई से एक या दो दिन पहले स्टाम्प 3 लीटर या लासो 2 लीटर का प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। रोपाई के एक महीने पश्चात् हल्की निराई–गुड़ाई अवश्य करें ताकि पौधों की बढ़वार ठीक हो सके। आवश्यक नमी बनाये रखने के लिए 10 से 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई अवश्य करें।

कीट एवं रोग नियंत्रण

थ्रिप्स : पीले भूरे बेलनाकार शिशु व प्रौढ़ दोनों पत्तियों का रस चूसकर हानि पहुँचाते हैं। ग्रसित पत्तियों पर धब्बे पड़ जाते हैं तथा बाद में पत्ते मुड़ जातें हैं। इस कीट के प्रकोप से पत्तियाँ ऊपर की तरफ मुड़ती हैं, जिससे पौधे की दैहिक क्रिया प्रभावित होती है, पौधा छोटा रह जाता है, जिसके कारण पैदावार घट जाती है। यह कीट मोजैक रोग का वाहक भी है।

नियंत्रण : खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए। इस कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 200 एस.एल. की 100 मिलीलीटर या क्लोरफेनापॉयर 10 प्रतिशत एस.सी. की 2 मिलीलीटर/लीटर पानी की दर से 2–3 छिड़काव 12–15 दिनों के अन्तराल पर करना चाहिए।

मैगट : यह सफेद मटमैले रंग का कीट होता है। यह कीट जड़ों में सुराग कर देता है जिससे पौधे सुख जाते हैं।

नियंत्रण : इस कीट के नियंत्रण हेतु फिप्रोनील 0.3 जी. की 20 किलोग्राम मात्रा/हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए तथा डायकोफॉल 18.5 ई.सी. की 1 मिलीलीटर मात्रा/लीटर पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए।

बैंगनी धब्बा रोग : इस रोग का फैलाव उस समय अधिक हेाता है जब तापक्रम 25–28 डिग्री सेन्टीग्रेट तथा आर्द्रता 80–90 प्रतिशत रहती है। यह एक फफूँद जनित रोग है। इस रोग के लक्षण सर्वप्रथम पत्तियों पर सफेद हल्के भूरे रंग के धब्बे दिखायी देते हैं जो नम वातावराण में फैलकर काफी बड़े हो जाते हैं और बाद में इन धब्बों का रंग बीच से बैंगनी हो जाता है। इस रेाग का प्रकोप प्याज की पत्तियों, डण्ठलों पर होता है। रोग की उग्रता बढ़ने पर पत्तियाँ झुलस जाती हैं जिससे उत्पादन प्रभावित होता है।

नियंत्रण : प्याज बोने से पहले खेत की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें, खरपतवारों व अन्य अवशेषों को एकत्र कर जला दें, पौधशाला को थीरम से उपचारित करें। इसके लिए थीरम 5 ग्राम/वर्गमीटर प्रयोग करें। बीज बोने से पहले बीज शोधन का कार्य थीरम की 3 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज दर से अथवा ट्राइकोडर्मा की 5–10 ग्राम मात्रा/किलोग्राम बीज की दर से करें, रोपाई के तुरन्त बाद मैकोजेब की 2.5 ग्राम मात्रा/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें फसल पर लक्षण दिखायी देने पर मैंकोजेब 75 प्रतिशत चूर्ण की 2.5 ग्राम/लीटर पानी या क्लोरोथैलोनील 75 प्रतिशत चूर्ण की 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से 2–3 छिड़काव 10–12 दिनों के अन्तराल पर करना चाहिए।

झुलसा रोग : इस रोग के लक्षण सबसे पहले पत्तियों एवं डण्ठलों पर छोटे–छोटे सफेद एवं हल्के पीले धब्बे बनते हैं जो बाद में एक दूसरे से मिलकर बड़े व भूरे रंग के हो जाते हैं और अन्त में गहरे भूरे या

काले रंग के दिखायी देते हैं। पत्तियाँ धीरे–धीरे सिरे की तरफ से सूखना शुरू करती हैं और आधार के तरफ बढ़कर पूरी सूख जाती हैं। इस रोग के कारण भी उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
नियंत्रण : इस रोग का नियंत्रण कार्य प्याज के बैंगनी धब्बा रोग प्रबंधन के अनुसार ही करना चाहिए।

खुदाई व उपज

लीक पौध रोपड़ से खुदाई तक लगभग 140 दिन का समय लेती है। पौधे जब 2–3 सेन्टीमीटर व्यास के हो जाये तो इन्हें उखाड़ लेना चाहिए। अच्छी देखभाल से उगाई हुई फसल से औसतन 300–400 कुन्तल पैदावार मिल सकती है।

बीज प्राप्त करने का स्रोत

- गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड
- भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर, कर्नाटक
- भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी

निष्कर्ष

लीक प्याज वर्ग की एक महत्वपूर्ण फसल है, जो पोषक तत्वों से भरपूर होती है और कई व्यंजनों में उपयोग की जाती है। इसकी खेती के लिए दोमट भूमि और ठंडी जलवायु उपयुक्त होती है। इसके पौष्टिक तत्व और विशेष स्वाद इसे उपभोक्ताओं के बीच लोकप्रिय बनाते हैं। लीक की अच्छी पैदावार के लिए उचित भूमि, जलवायु, उर्वरक और सही समय पर बुवाई व रोपाई आवश्यक होती है। कीट और रोग नियंत्रण के लिए रासायनिक और जैविक विधियों का पालन किया जाना चाहिए। 140 दिनों में तैयार होने वाली इस फसल से अच्छी देखभाल के साथ औसतन 300–400 कुन्तल पैदावार प्राप्त की जा सकती है। कुल मिलाकर, लीक की खेती से किसानों को अच्छी आय प्राप्त हो सकती है और यह सब्जी बाजार में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाए रख सकती है।